REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.2331 (UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 7 | ISSUE - 7 | APRIL - 2018

सुर्यबाला के कथा साहित्य में चित्रित महानगरीय जीवनबोध

संध्या धा. धुले
शोधार्थी छात्रा

प्रस्तावना :

'नगर' उसे कहा जाता है, जहाँ लोग उद्योग को अपनी उपजीविका का मुख्य स्त्रोत मानते है। 'नगर' में व्यापार की गतिविधि और स्पर्धा बहुत तेज होती है। अनेक प्रांतों से लोग आकर बसते है। कारखाने, व्यापार और उद्योग के अन्य साधन 'नगर' की रचना के आधार होते है। महानगर के लोग बहुत संघर्षों के बीच जीते है। उनका जीवन एक दौड़ की तरह फैल जाता है। वह भीड़ का धीरे–धीरे हिस्सा बन जाता है। नगर केवल रहने, काम करने का स्थान ही नही अपितु वह सांस्कृतिक, राजनैतिक, आर्थिक जीवन के नियंत्रण एवं आधुनिकीकरण का महत्वपूर्ण केंद्र है। वह उत्तरोत्तर घनत्व में जब विकसित होता है तब उसे 'महानगर' कहा जाता है। कन्हैयालाल नन्दन के शब्दो में –"महानगर और क्या है, वातावरण को धुँधला करती अनगिनत कारखानों की चिमनियाँ, शोर मचाते इंजन, ट्रक, ठेले, स्कूटर, भीड़–भाड़, नारे लगाते हड़तालें करते मिल–मजदूर, रातभर जागने वाले बहुमंजिला होटल, कैबरे, फुटपाथ पर दम तोडते कराहते बीमार मजदूर, हर प्रकार का काला–सफेद धंधा, आबरू–बेआबरू होती भारत की प्राचीन परम्पराएँ, धोखाधड़ी, बेईमानी, सौदेबाजी, चोरियाँ। महानगर के निवासी रोज सुबह मौत को जेबों में डालकर निकलते है, लोकल ट्रेनों, वायुयानों, कारों, फुटपाथों पर....."[१]

प्रगति और विकास भी समस्याएँ उत्पन्न करती है। जैसे – औद्योगिकरण, वैश्वीकरण, बाजारवाद, उदारीकरण आदी। साहित्यकार समाज में घटीत घटनाओं का सूक्ष्म निरीक्षण करता है और अपनी प्रतिभा के बल पर उसका चित्रण करता है। सूर्यबाला के कथा–साहित्य में चित्रित महानगरीय समस्याएँ यथार्थ है। सूर्यबालाजी का संबंध अनेक बड़े शहरों से आया है। इसिलिए उनके साहित्य में महानगरों की समस्याओं का चित्रण मिलता है।

१) गरीबी :–

'सुबह के इंतजार तक' उपन्यास में गरीबी की समस्या का चित्रण मिलता है। मानु गरीबी के कारण ही मामा–मामी के यहाँ शहर जाती है, वहाँ उसे बलात्कार का शिकार होना पड़ा। मानु का अंत भी गरीबी के कारण ही होता है। "मै किसी तरह हाईस्कूल पास कर दूँ साल से घर में बैठी थी। मुझसे छोटा बल्लू कभी एक ड़ेढ साल पढ़ता, कभी फिस जमा न कर पाने से नाम कट जाने पर घर बैठा रहता है।"[२] बल्लू और मानु शहर में जाते है। मानु शहर में ॲबारशन कर लेती है। मानु स्कूल में नोकरी करती है घर पर ट्यूशन भी पढाती है। आधे पेट रहकर भाई को खिलाती है और डॉक्टर बनाती है। गरीबी के कारण इलाज न कर पाने से कैंसर से मर जाती है।

'अग्नीपंखी' उपन्यास में जयशंकर की माँ गाँव जाने के लिए आग्रह करने लगती है लेकिन जयशंकर गाँव का नाम भी नहीं लेना चाहता। वह कुलदेवता और पुरखों का हवाला देती है। जयशंकर आपे से बाहर होकर चिल्लाकर कहता है,"चुप्प करों, अपना पाखंड़ मेरे सामने मत झाड़ों। अब कान खोलकर सुन लो जिओगी भी यही, मरोगी भी यही और मर जाओगी तो तुम्हारी मिट्टी भी वहाँ नही जा सकती।"[३] यहाँ पर एक बेटा गरीबी के कारण बोखला जाता है। एकलौता बेटा होकर भी अपनी माँ के साथ निर्मम व्यवहार करता है। परिस्थिती मनुष्य को यह सब करवाती है। गरीबी का यह भीषण दृश्य 'अग्नीपंखी' में नजर आता ळें

२) भ्रष्टाचार :–

'गीता चौधरी का आखिरी सवाल' में स्कूल की छात्रा गीता चौधरी को छोटी होकर भी इस बात का पता चलता है कि, "सिर्फ कुछ सालों में ही छोटा भाई ओवरसियर हो जाएगा। हजारों की ऊपरी कमाई का बंदोबस्त। सभी कहते है – अरे, जब छोटी–मोटी पुलिया में हजारों की बाँट–बूट होती है तो बडे बाँध और प्रोजेक्टों की बात ही क्या! कोई बेईमानी थोडी मानी जाती है यह सब! सबका हिस्सा बराबर बँटता है। सिर्फ चार–पाँच सालों में इस खस्ता हाल परिवार का जीर्णोद्धार!"[४]

उपर्युक्त कथन सें यह स्पष्ट हो जाता है कि आधुनिक समाज में भ्रष्टाचार कोई बड़ी बात न होकर उसे सहजता से लिया जा रहा है। मानो भ्रष्टाचार आज की आवश्यकता ही बन गई है। बच्चों पर संस्कार भी भ्रष्टाचार के ही हो रहे हैं। घर में जो चल रहा है बच्चे वही बयान करते है। उपर्युक्त स्कूल की बच्ची का कथन यही दर्शाता है।

३) झोपड़पट्टी :–

'अग्नीपंखी' में झोपड़पट्टी की समस्या का जीवंत चित्र प्रस्तूत किया है। जयशंकर मुंबई में झोपड़पट्टी में रहता है। साथ में गाँव से अपनी माँ को लेकर जाता है। छः बाई छः फुट की झोंपड़ी में जवान बहू–बेटे के साथ बूढ़ी माँ कैसे रहेगी? जयशंकर विवश होकर कोठरी में एक गहरे नीले रंग की साड़ी का परदा टांग देता है और दूसरी तरफ माँ के लिए एक खटिया ड़ाल देता है। इस तरह लेखिका प्रकट करती है कि– "वही बेटा, वही बहू, वही माँ.....उसी में दुनिया के सारे धंधे। सोचते भी पाप लगे।"[५] लेकिन इस समस्या का और कोई समाधान नही है। शहरों में रहने के लिए घर नही मिलता। झोपड़पट्टी में एखाद छोटा कमरा मिल जाता है। वहाँ इससे भी बड़ी समस्या टट्टी बाथरूम की है – "लेकिन सबसे जानलेवा होता, दिशा मैदान की हाजत दबाए बैठे रहना।"[६] अड़ोस – पड़ोस के सभी लोग एक ही बाथरूम के सामने लाईन लगाकर खड़े होते है और जल्दी – जल्दी निपटकर बाहर आ जाते है।

'सुनंदा छोकरी का ड़ायरी' में झोपड़पट्टी वासियों को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। यहाँ पर सुनंदा खेलने – कूदने की उम्र में बंगले पर काम के लिए जाती है। घर में अपाहिज बाप है। वह नैराश्यग्रस्त होने के कारण दारू पीता है। सुनंदा के छोटे भाई – बहन कचरा उठाने का काम करते है। माता पिता का अंत भी इन समस्याओं के कारण ही होता है।

४) दारू की समस्या :–

हमारे समाज में विशेषतः निम्नवर्ग में दारू की समस्या दिन–ब–दिन बढ़ती ही जा रही है। 'जेब्रा' कहानी का पिता अपने बेटे को काम करने के लिए भेजता है, ताकि उसके पेट तथा शराब का प्रबंध हो सके। 'सुनंदा छोकरी का ड़यरी' कहानी का बाप दिन–रात दारू पीकर हर दिन लफड़ा करता है। अपाहिज होकर भी घिसट–घिसट कर जाकर दारू पीता है। पत्नी और बच्ची के पगार के पैसे दारू में उड़ा देता है। 'मटियाला तीतर' कहानी का बाप नशे में धुत रहता है। अपनी पत्नी पर गुस्सा करता है। नशे के कारण सारे परिवार में उसका आतंक फैल जाता है। माँ और बच्चे ड़र के मारे दुबक जाते है। अपनी पत्नी की कमाई के पैसे हड़प लेता है और दिन–रात चिलम फुँकता है। 'सिंड्रेला का स्वप्न' इस कहानी की छोटी बच्ची झोपड़पट्टी क्षेत्र में रहती है। झोपड़पट्टी में गंदगी, गरीबी और व्यसनाधीन लोग दिखाई देते है। इसलिए कामवाली बच्ची कहती है–"इदर बस्ती में सभी मरद दारू पीता"[७]

५) बाल मजदूरों की समस्या :–

आज भी गरीबी के कारण छोटे बच्चों को कम उम्र में ही काम पर लगाया जाता है। वह काम भी ठीक ढंग का नही होता। चरस की पोटली ढ़ोने का काम करना पड़ता है। 'गृहप्रवेश' की शकुन कहती है–"मेरे सामने ही चरस की पोटली लेकर आते हुए एक बच्चे को पकड़कर पुलीस ने बुरी तरह पीटा कि बेचारा खून से लथपथ घंटों छटपटाता रहा"[८]

निष्कर्ष : –

सूर्यबाला के कथा साहित्य में विविध महानगरीय समस्याएँ चित्रित है। उन्होंने समाज के सभी घटकों को बड़ी सूक्ष्मता से देखा है, परखा है। सूर्यबाला के साहित्य का उद्देश समाजहित है। उनके साहित्यीक रचनाओं के सभी पहलूओं को परखने से यह पता चलता है कि, सूर्यबाला एक सशक्त, सदृढ़ समाज का नवनिर्माण चाहती है। सूर्यबाला भारतीय संस्कृती कि पक्षधर है, लेकिन उन्होने अपनी साहित्यीक रचनाओं के माध्यम से अनिष्ट धर्मिक रूढ़ि, परंपराओ का विरोध भी किया है। सूर्यबाला जी के कथा साहित्य में महिलाओं की समस्याएँ, उनका संघर्ष तथा उनका आत्मविश्वास कई रचनाओं में दिखाई देता है। मानवी जीवन की हर समस्या को सूर्यबाला ने सफलता के साथ प्रस्तुत किया। उनके कथा साहित्य में महानगरीय समस्याओं के साथ उनका हल किस तरह से होना चाहिए, इस बात पर भी प्रकाश डाला है।

संदर्भः

१ कन्हैयालाल नंदन, मुझे मालूम है, पृ. ४२
२ सूर्यबाला, सुबह के इंतजार तक, पृ. १३
३ सूर्यबाला, अग्निपंख, पृ. ७८
४ सूर्यबाला, गृहप्रवेश, पृ. १४१
५ सूर्यबाला, अग्निपंख, पृ. ३६
६ वही, पृ. ३६
७ सूर्यबाला, दिशाहीन, पृ. १३६
८ सूर्यबाला, गृहप्रवेश, पृ. ३२